प्रकाशन की तिथि 01.05.2017

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

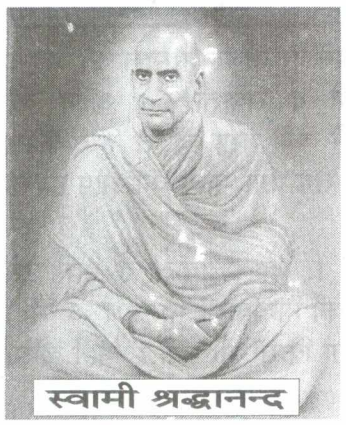
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

पं. मदनमोहन मालत्रीय

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 40 अंक 5

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

मई 2017 विक्रम सम्वत् 2074 बैशाख-ज्येष्ठ

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

नदियों में निर्मल जल नहीं मल-मूत्र बहने लगा है

शुद्धीकरण के लिए कुछ ठोस सुझाव

-सुबोध कुमार

मुस्लिम काल से भारत वर्ष के सामान्य जीवन में जो परिवर्तन आए इनमें एक है पर्दा, जिसके रहते घरों में ही शौचालय बनाने की प्रथा चल पड़ी। भारत वर्ष में शौच के लिए घर से दूर जंगल जाने, प्रातः भ्रमण, मंदिर शिवालय से , गोशाला इत्यादि से होते हुए, नित्य कर्म से निवृत होकर अपनी दैनिक दिनचर्या आरंभ करने की प्रथा थी। मुस्लिम नवाबों और बेगमों को बाहर शौच के लिए जंगल जाना पसंद नहीं था। सामान्यतः हिन्दू भी जो शौच के लिए बाहर जंगल जाते थे, आलस्य सुविधा और नवाबी फैशन के कारण अपने घरों में शौचालय बनवाने लगे। जो हिन्दू भाई जजिया टैक्स नहीं दे पाते थे और अपना हिन्दू धर्म छोड़ कर मुसलमान नहीं बनना चाहते थे उन्हें जबरदस्ती नवाब साहब के घरों के शौचालय साफ करने का काम करना होता था। यहीं से जाति गत हाथ से सिर पर मैला ढोने की कुप्रथा का आरंभ हुआ। कई शताब्दियों से मुस्लिम शासन काल से आरम्भिक प्रथा के अनुसार सब घरों से मैला ढोने का काम हमारे अपने वह हिन्दू भाई करते हैं, जिन्हें अपना हिन्दू धर्म छोड़ना किसी भी हालत में पसंद नहीं था चाहे मैला ढोने का निकृष्ट काम करना पड़े। यह भी एक सोचने की बात है कि जिन हिन्दू भाइयों को पाकिस्तान से निकलने नहीं दिया गया वे मुख्य रूप से मैला ढोने वाले ही थे। उनके साथ, उनकी स्त्रियों, बच्चों के साथ आज तक प्रतिदिन जो अत्याचार, बलात्कार होते रहते हैं वह किसी मानवाधिकार संस्था के ध्यान का विषय नहीं रहे हैं।

हम हिन्दू धर्म पर अडिग रहने वाले उन भाइयों पर गर्व करने और सम्मान देने के स्थान पर उनको नीच काम करने वाले अस्पृश्य मानते चले आ रहे हैं। गांधी जी ने इन भाइयों को सम्मान देते हुए 'हरिजन' नाम दिया। स्वयं गांधी जी अपने आश्रम में और उनके सब आश्रमवासी बारी-बारी से अपने हाथ से लैट्रीन साफ करते थे। पर सब कांग्रेसियों को, जो गांधी जी के सहारे उच्च राजनैतिक नेता बनते रहे हैं, गांधी जी के जीवन काल ही में उनके आश्रम की पहली क्लास का अपना मैला स्वयं साफ करने का पहला ही पाठ गांधी जी भी नहीं सिखा सके। वे लोग, जो गांधी जी के आश्रम की पहली ही क्लास में अस्पृश्यता छोड़ने का पाठ नहीं पढ़ पाए, गांधी जी के अनुयायी कांग्रेसी कहलाने वाले क्या वास्तव में कांग्रेसी कहलाने का हक रखते हैं? हां उनके उत्तराधिकारियों की सरकार ने तो हाथ से मैला ढोने के काम को कानूनन बंद करके अपना दायित्व निभा लिया, जैसे भारतवर्ष के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने 1962 में चीन के आक्रमण के समय भारतीय सेना अध्यक्ष को Throw the chinese out of India का आदेश देकर अपना पल्ला झाड़ लिया था। लेकिन सरकार के इस कानून बना देने से क्या भारतवर्ष में दलितोद्धार हो

गया? हाथ से सफाई करने वाले क्या कुछ और करने लगे?

आज के युग में वैज्ञानिक प्रगति के आधार पर घरों पर हमारे मलमूत्र, कूड़े-कचरे को संभालने के लिए विज्ञान और इंजीनियरिंग के मेल से ऐसी व्यवस्था बनाने की आवश्यकता है जो पर्यावरण के अनुकूल इस मलमूत्र का प्रबन्धन कर सके। जनसंख्या में लगातार भारी वृद्धि भी इस समस्या को और भीषण बनाने में अपना योगदान देती रही है।

अंग्रेजों के आने और नागरिक क्षेत्रों का विस्तार होने पर विज्ञान और पाश्चात्य तकनीकी प्रगति ने फ्लश लैट्रिन और भूमिगत सीवर प्रणाली को जन्म दिया। अब हर घर के थोड़े से मैले को एक बाल्टी भर स्वच्छ पेय पानी से फ्लश द्वारा हमारी आंखा से ओझल कर के भूमिगत सीवर में पहुंचा दिया जाने लगा। इस मैले को सारे नगर के नीचे मल की एक शोभा यात्रा करा कर सारे नगर से इकट्ठा कर के बाहर किसी नदी नाले में बहाना आरंभ हो गया। इस प्रकार अपने जल स्रोतों को दूषित करने की नैतिकता पाश्चात्य सभ्यता में कभी विचारणीय नहीं थी। यह कभी किसी बुद्धिजीवी इंजीनियर/वैज्ञानिक के सोचने का विषय नहीं रहा कि आखिर इतने सारे स्वच्छ पेय जल का ऐसे मैला सीवर में ढकेलने में दुरुपयोग कहां तक ठीक रहेगा। आज जब पेय जल की इस बर्बादी से उत्पन्न पेय जल के अभाव के कारण पीने के पानी की एक बोतल 20 रुपये में लेनी पड़ती है, तब भी हम विवश हैं कि अपने फ्लश में इतना पेय जल बर्बाद कर रहे हैं और जिस दूषित जल को हम अपनी नदियों में बहा रहे हैं, उन्हीं नदियों से हमारा पेय जल भी तो आता है। हम अपने पेय जल को योजनाबद्ध तरीके से मलमूत्र से दूषित करके नाले छोड़ कर समाज को दूषित जल पीने के लिए बाध्य कर रहे हैं। क्या अनजाने में हमारा प्रशासन, समाज में जलप्रदूषण को बढ़ावा दे कर, भयंकर रोग को योजनाबद्ध तरीके से नहीं बढ़ा रहा?

लगभग 3 दशक पहले यह बात ध्यान में आई कि नदियों के जल को प्रदूषण से रोकना चाहिए। नागरिक क्षेत्रों के सब मैले को स्वच्छ बनाने के लिए STP सीवेज ट्रीटमैन्ट प्लान्ट लगाने की योजनाएं कार्यान्वित हो चलीं। STP लगभग सब नगरों में सब नालों को नदियों में छोड़ने से पहले लगाए जाते रहे हैं। देश का लगभग पचास हजार करोड़ रुपया खर्च भी हो गया। परन्तु हमारी नदियों के जल में

वैज्ञानिकों ने गंगा के जल में यह पाया है मल मूत्र के अत्यधिक मात्रा में होने के कारण गंगा के समस्त जल के जूप्लान्क्टन में ट्यूमर हो गए हैं। अब गंगा में पाई जाने वाली सब मछलियों में भी ऐसे ही रोग पाए जा रहे हैं।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मैले की मात्रा टस से मस नहीं होती दिख रही। इस नदियों के जल को स्वच्छ करने के लिए और अधिक STP लगाने के लिए धन का साधन जुटाया जा रहा है। इतने सारे STP लगने के बावजूद भी नदियों का जल स्वच्छ क्यों नहीं हो रहा?

इंजीनियर यह कहते हैं कि STP छोटे पड़ रहे हैं और बड़े लगने चाहिए। सरकार अपने हाथ खड़े कर देती है कि इतना आर्थिक साधन जुटाने के लिए पैसा नहीं है। STP प्रणाली क्लोरिन जैसे रासायनिकों द्वारा दूषित जल के जीवाणु मार कर जल में वायुमंडल से आक्सीजन ले कर बिजली के पम्पों द्वारा चलती है। STP संयंत्र बिजली से चलते हैं। हमारे देश में बिजली कितनी आती है। जब बिजली नहीं होती, जो कि राजधानी दिल्ली तक में आधा समय नहीं रहती, उस दशा में सारा मल मूत्र STP संयंत्र लगे रहने पर भी बिना उपचार के सारा दूषित जल नदियों में जाने से रोक पाना संभव नहीं होता। सारा समय जांच, तर्क–वितर्क में निकल रहा है। इस बीच में सीवर चलते रहेंगे, नदियों में मैला जाता रहेगा। आखिर लोग रोज शौच जाना तो बंद नहीं कर देंगे कि थम जाओ अभी इंजीनियर साहब सरकार से पैसा ले कर बड़े STP लगाने वाले हैं। STP के अतिरिक्त कोई और विकल्प हम अभी तक स्थापित नहीं कर पाए हैं। कुछ चर्चा हो तो विदेशों से आधुनिक, तकनीक मंगाने की बात चल पड़ती है। आज विश्व के उन्नत देशों में इस पुरानी STP प्रणाली के स्थान पर पर्यावरण के अनुकूल प्रणाली लगाई जाती है। कोई भी विदेशी तकनीक स्थानीय समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। हमारे अपने देश के इंजीनियर इन योजनाओं में क्यों अपना दायित्व नहीं निभा पाते? क्या हमारे देश के सब इंजीनियर एटम विद्युत ऊर्जा संयंत्र बनाएंगे, या IT उद्योग से जुड़ कर अमरीका जैसे अमीर देशों की कालसेन्टर में चपड़ासीगीरी की नौकरी? जो आज के बदलते वैश्विक आर्थिक संकट से जूझते अमेरिका के भविष्य में इतना आसान नहीं रहेगा। हमारे स्थानीय रूप से स्थापित इंजीनियरिंग कालेजों का सब से पहला दायित्व स्थानीय समाज की ऐसी समस्याओं का समाधान करके समाज के प्रति अपनी सेवा देना होना चाहिए।

आज यह परिणाम है कि हमारी नदियों में स्वच्छ निर्मल जल के स्थान पर मल मूत्र बहने लगा है। यहां तक कि गंगा मैया भी इस पाप से बची न रहीं। हमारे देश में जैसे वैज्ञानिकों की कमी रही हो, अमेरिका के वैज्ञानिकों ने गंगा के जल पर अुनसंधान में यह पाया है कि गंगा जल में मल मूत्र के अत्यधिक मात्रा में होने के कारण गंगा के समस्त जल के जूप्लान्क्टन (जलीय सूक्ष्म प्राणी जो मछलियों का आहार होते हैं) में टूयूमर हो गए हैं। अब गंगा में पाई जाने वाली सब मछलियों में भी ऐसे ही रोग पाए जा रहे हैं। इस का दुष्प्रभाव गंगा से जुड़ी सारी खाद्य श्रृंखला पर पड़ रहा है। साधारण भाषा में गंगा में सारी मछलियां कैंसर जैसे रोगाणुओं से प्रभावित हैं। जिस जल से हमारी सब सब्जी इत्यादि की सिंचाई होती है वह सब जल भयानक कैंसर जैसे रोग के तत्व हमारे आहार में पहुंचा रहा है। यह बात केवल गंगा पर ही नहीं सब नदियों पर उतनी ही लागू होती है। क्या यह सच नहीं है कि भारत वर्ष में कैंसर रोग एक महामारी का रूप ले चुका है। हर परिवार का एक न एक सदस्य कैंसर से पीड़ित पाया जाता है।

UPA सरकार ने तो सन्त मंडल के आंदोलन से प्रभावित हो कर गंगा को एक राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर के अपना पल्ला झाड़ लिया है। गंगा एक माता की तरह अपने बच्चों के मल मूत्र के दायित्व को निभाने की क्षमता रखती है। परन्तु भीषण जनसंख्या की वृद्धि से सारे वयस्क समाज के मलमूत्र का भार पड़ने पर केवल समाज को अपना श्राप ही दे सकती है। आज के, महामारी की तरह बढ़ते हुए कैंसर इत्यादि रोग गंगा माता का श्राप ही तो हैं।

1. आवश्यकता है एक ऐसे कानून की कि किसी भी नगर का मैले का नाला किसी भी नदी में नहीं छोड़ा जाएगा।

2. मैले दूषित जल का पर्यावरण के अनुसार सब से अच्छा तरीका Root Zone Treatment और Lagoons and wetlands माना जाता है। यह हमारी प्राचीन भारतीय पद्धति भी थी। इनकी ओर कभी भी हमारे देश में ध्यान नहीं दिया गया है।

नागरिक क्षेत्र के घरों में फ्लश टायलेट के स्थान पर कम से कम पानी प्रयोग करने वाले आधुनिकतम डिजाइन लगाए जाएं। विदेशों में इनका काफी प्रचलन हो चला है। इनका भारत वर्ष में डिजाइन भी हो सकता है।

4. ग्रामीण और जहां उपयुक्त भूमि उपलब्ध है सुलभ शौचालय पद्धति का प्रयोग किया जाए।

5. पहाड़ी और ठंडे प्रदेशों में मल मूत्र के बायोगैस संयंत्र, जैसे भारतीय सेना ने लेह, लद्दाख, कारगिल क्षेत्रों के लिए विकसित किए हैं, लगाए जाएं।

एकाग्रता ही एकता है

– स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

मानव की सफलता का मुख्य कारण एकाग्रता है। मानव का सर्वांगीण विकास भी एकाग्रता के आधार पर ही सम्भव है। जीवन भर में मनुष्य एक साथ अनेक लक्ष्यों को निश्चित करके कार्य करता है, तो एक भी लक्ष्य पूरा नहीं होता। जब अनेकों लक्ष्यों को त्याग करके केवल एक लक्ष्य को उद्देश्य बना लेता है तो कार्य सरलता से होता है और सफलता का किनारा प्राप्त करके अपने को सौभाग्यशाली मानता है वह जीवन को सुखमय तथा शान्तिमय विचारों से पूरा करता है। अतः सभी उन्नतियों का मुख्य सिद्धान्त है– एकाग्रता

एकाग्रता का रहस्य जानने के लिए प्रश्न उत्पन्न होता है? किसकी एकाग्रता और कैसी एकाग्रता?

उत्तर के रूप में, मन–बुद्धि–चित्त–अहंकार की एकाग्रता अर्थात् अन्तःकरण चतुष्टय की एकाग्रता। द्वितीय प्रश्न खण्ड के उत्तर में हम यह सारांश पाते हैं, कि मन–बुद्धि–चित्त एवं अहंकार का लक्ष्य एक रह जाय, वही एकाग्रता का तात्पर्य है।

पुनः विचार उत्पन्न होता है कि जब अन्तःकारण चतुष्टय के सभी साधनों का कार्य पृथक्–पृथक् है पुनः इनमें एकाग्रता कैसे सम्भव है? क्योंकि मन–सकंल्प–विकल्प करता है। बुद्धि निश्चय करती है, चित्त संस्कारों का संग्रह करता है। इन सभी के कार्यों की विभिन्नता होती है, पुनः एकाग्रता सम्भव कैसे हो सकती है?

प्रिय पाठक वृन्द! महर्षि पतंजलि ने व्याकरण महाभाष्य में एक सिद्धान्त स्थापित किया है–

"गौण मुख्ययोर्मुख्ये कार्य सम्प्रत्ययः।"

अर्थात् – मानव के सामने मुख्य एवं गौण कार्यों में कौन सा कार्य पहले सम्पन्न किया जाय? ऐसी अवस्था आने पर अर्थात् निर्णय न हो पाने की स्थिति में मनुष्य को मुख्य कार्य करना चाहिए, अर्थात् गौण मुख्य की स्थिति में मुख्य कार्य को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

उक्त सिद्धान्त से यह नियम हस्तगत हुआ कि अन्तःकरण चतुष्टय के कार्य भिन्न होने पर भी मुख्य कार्य आत्म दर्शन है, यही जीवन का मुख्य लक्ष्य है। इस अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अन्य कार्यों को स्थगित करके मुख्य उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

एकाग्रता की विधि – आत्म दर्शन रूपी मुख्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए सर्वप्रथम साधकों को चाहिए, कि शारीरिक क्रियाओं को स्थगित रखने का ही अभ्यास पहले करें। इसका तात्पर्य है कि साधक शारीरिक क्रियाओं को बन्द करके शान्त भाव से बैठे। ज्ञानेन्द्रियों को निश्चेष्ट बनायें। प्राणों को प्राणायामादि क्रियाओं से सूक्ष्मतम बनायें। पुनः अन्तःकरण की सूक्ष्म क्रियाओं को नियन्त्रित करने का अभ्यास करें। इसके अनुसार जब मन का संकल्प विकल्प अपने वश में आ जाए अर्थात् शान्त हो जायें। पुनः बुद्धि में सांसारिक कोई विचार न ठहरे अथवा सांसारिक विचार या चिन्तन को बुद्धि का विषय न बनाया जाय। फिर चित्त वृत्तियाँ जो जन्म जन्मान्तरों की चित्त पटल पर अंकित हैं उनका उद्भव न होने पाये। यही कार्य कठिन है, इसी कारण महर्षि पतंजलि योग की परिभाषा करते हुए इसको सूत्रित किया "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् एक

दिन में प्रातः सत्व गुण प्रधान वृत्तियों के कारण व्यक्ति "धर्म" ऐश्वर्य, वैराग्य, दान, पुण्य कार्य यज्ञादि करने का विचार करता है। दिन के मध्य में रजोगुण के प्रभाव से धन, वैभव, राज्य, यश, कीर्ति की प्रगति के लिए राजसी वृत्ति के कारण भागा भागा फिरता है, इसी लक्ष्य के लिए छल कपट, झूठ, अत्याचार, अनाचार, रिश्वत, धोखेबाजी से काला धन संग्रह करके कई जन्मों तक सुख समृद्धि के साधनों का संग्रह करने की सोचता है। उसी व्यक्ति पर जब तमोगुण का प्रकोप होता है, तब शरीर के भारीपन में सोना, नशा करना, आराम से पड़े रहने तथा शराब पीना अपना या अन्यों का भला करने की सोचता भी नहीं। मानवता के गुण को भुलाकर दानवता और पशुता की कोटि में अपनी शक्ति को डाल देता है। वास्तव में रजोगुण एवं तमोगुण के प्रभाव से ही शरीर में रोग, मस्तिष्क में तनाव, निराशा, उदासीनता, अत्याचार, निष्क्रियता आदि दानवीय दुष्कर्मो का आधान होने लगता है। इस भांति अन्तःकरण का प्रत्यक्ष क्रमशः किया जाय। अहंकार की समाप्ति पर आत्म तत्व का बोध होने लगता है। अहंकार की समाप्ति के लिए बुद्धि का निश्चय आत्म चिन्तन एवं परमात्म चिन्तन निरन्तर बना रहे इस क्रिया में आत्मा का सम्बन्ध प्रकृति प्रधान बुद्धि से हट कर ज्ञान प्रधान नित्य परमात्म तत्व के साथ हुआ है। अनुभव होने लगे, यही प्रक्रिया आत्म दर्शन की प्राप्ति में सक्षम है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में पहले के सभी अन्तःकरण के साधन अपना कार्य स्थगित कर देते हैं।

सामाजिक एकता की विधि – जो साधक अपने अन्तःकरण पर नियन्त्रण कर लेता है। उभय इन्द्रिय तथा शरीर पर विजय पा लेता है। स्वयं नेता बनने की चाह डाह या प्रयास नहीं करता। वह एकता की शक्ति को अनुभव करके धर्मात्मा नीतिनिपुण, योग्य योगीमन वाले को प्रश्रय देता है। जिनकी गति अधिक तीव्र है, उनको मन्द करना, समझ रखना, जो मन्द हैं उन्हें तीव्र करना एकता के लिए आवश्यक है। वाणी का व्यवहार समान हो मन के संकल्प समान हो, हृदय के भाव भी एकता से ही सम्बद्ध हों। इस भांति बाह्यकरण एवं अन्तःकरण के सभी अंग उपांग एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूरे संगठन का साथ दें, तो कार्य शीघ्र सिद्ध हो जाता है। सामाजिक एकता के लिए कार्यकर्त्ताओं की एकता समग्र शक्ति का स्वरूप होकर क्रान्ति का स्वरूप धारण कर लेती है।

अन्तः करण की एकता जिस प्रकार आत्म दर्शन में सहायक हैं। उसी प्रकार सामाजिक, राष्ट्रीय संगठन के लिए सहायक इकाइयों की एकता मुख्य संगठन की एकता में अहं भूमिका उपस्थित करती है। संगठन के छोटे कार्यकर्त्ता से लेकर प्रमुख अधिकारी, नेतागण संगठन के मुख्य लक्ष्य को महत्व देते हैं। अपने स्वार्थ को भी संगठन के लक्ष्य में विलीन कर देते हैं तो बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त करने में संगठन सफल हो जाता है।

वर्तमान में ही नहीं किन्तु सदैव एकता में शक्ति का संचार देखा गया है। अतः जो भी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक या पारिवारिक संगठन अपने को सुखी समृद्ध सम्पन्न और सफल बनाना चाहते है वे इस वैदिक मान्यता को प्रयोग में लाऐं, उनका कल्याण होगा, उनके कल्याण से समाज राष्ट्र तथा संसार का कल्याण होकर मानवता का सच्चा विकास तथा कल्याण होगा। आइए! हम सभी अपने स्तर पर ईश्वरीय नियमों से नियमित हो जाएं।

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान–निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके ।

– मन्त्री, सार्वदेशिक सभा ईमेल : aryasabha@yahoo.com

(वेदामृत)

हमारे अन्तःकारण में सोम सरोवर बहने लगे

सोम गीर्भिष्टां वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृलीको न आ विश ।।

– ऋ. १। ९१ । ९९

ऋषिः – **राहूगणपुत्रो गौतमः** ।। देवता – **सोमः**।। छन्दः – **निचृद्गायत्री** ।।

विनय – हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव! तुम सब जगत् के सार हो, जीवन–रस हो, फिर भी प्रकृति के विषयों में फँसा हुआ मनुष्य–संसार तुम्हें नहीं जानता, तुम कुछ हो यह कभी अनुभव ही नहीं करता, परन्तु हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोड़ी–बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरें–गाते फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें "वचोविद्" भी बना दिया है– तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति को, रहस्य को जान गये हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान गये हैं, अतः अपनी वाणियों से हम सदा तुम्हारा कीर्त्तन करते हैं, तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का पर्णन करते हैं। जहाँ विषयग्रस्त मानवी हृदयों ने तुम्हें निकाल रखा है या जहाँ प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी है, वहाँ भी तुम्हारा नाम फैलाते हैं, तुम्हें पहुँचाते हैं। मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते हैं, परन्तु हे देव! तुम इतना करो कि सात्त्विक सुख के दाता होते हुए सदा हमारे अन्दर प्रविष्ट रहो, बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुझे कहाँ से बढ़ा सकते हैं! हम तुझे फैलाते हैं, तुम्हारा राज्य फैलाते हैं– यह कहना कितनी धृष्टता का वचन है। हे सर्वशक्तिमन्! हे अनन्त, अपार! वास्तव में तुम्हीं जितना हमारे अन्दर प्रविष्ट होते हो उतना ही हममें तुम्हारा अवर्णनीय सात्त्विक सुख अनुभूत होता है और उस आनन्द में मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। तब हमारे एक–एक अंग से, हमारी एक–एक चेष्टा से, तुम्हारा प्रकाश होता है, अतः हमारी प्रार्थना तो यही है कि तुम हमारे अन्दर प्रविष्ट हो जाओ, तुम हममें आविष्ट हो जाओ। जितनी मात्रा में तुम हममें प्रविष्ट होओगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् में तुम्हारा प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो! इस सात्त्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए हममें आविष्ट हो जाओ।

शब्दार्थ – सोम – हे सोमदेव! **वयं वचोविदः** – वाणी के वेत्ता हम लोग **त्वा**– तुझे **गीर्भिः** – अपनी वाणियों द्वारा **वर्धयामः**– बढ़ाते हैं। **सुमृलीकः** – उत्तम सुख देनेवाले होते हुए तुम **नः आविश**– हममें प्रविष्ट हो जाओ।

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल ॥ ओ३म् ॥ आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

(निमन्त्रण–पत्र)

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

आर्यपुरम्, दून वाटिका, भाग-2, पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड) का

वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह

आप सबको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हिमालय की गोद में, पर्वतमाला से परिवेष्टित देहरादून के निकट पहाड़ों की रानी मसूरी की तलहटी में, प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा सुसेवित समुद्र के टापू के सदृश शोभायमान विशाल भूखण्ड में स्थापित श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ गुरुकुल का सप्तदश स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव तथा राष्ट्रभृत महायज्ञ दिनांक 2, 3 एवं 4 जून 2017, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। आप इष्टमित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। कार्यक्रम में उपस्थित होकर धर्मलाभ उठायें।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर 5 जून 2017 से 20 जून 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। जिसमें 15 वर्ष से 25 वर्ष तक आयुक्रम के युवक भाग ले सकेंगे। शिविर में वैदिक सिद्धान्त, बौद्धिक विकास, व्यक्तित्व निर्माण व राष्ट्रियता आदि विषयों की परिचर्चा के साथ-साथ योगासन, लाठी, भाला, तलवार, फरसेबाजी एवं अन्य भारतीय व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आवागमन व्यवस्था

जो सज्जन रेल तथा बस द्वारा गमनागमन करना चाहें, उनके लिए देहरादून स्टेशन एवं बसस्थानक (I.S.B.T.) से गुरुकुल तक वाहन की व्यवस्था रहेगी। रेल व बस द्वारा गमनागमन करने वाले सज्जन सम्पर्क अवश्य करें।

(दिल्ली) - 011-26525663,9868855155 :: (देहरादून) - 9411106104, 9411310530, 8810005096

आपके आवास-निवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था आप आर्यसज्जनों के सहयोग से गुरुकुल परिसर में ही रहेगी। वेद विद्या, संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, ऋषि लङ्गर, गो-रक्षार्थ तथा ब्रह्मचारियों के निर्माण में अन्न-धन का सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक

डॉ. अशोक चौहान	वी. मामचन्द	के. रुद्रसेन	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	डॉ. धनंजय आर्य
कुलपति	प्रधान	मन्त्री	संरक्षक एवं संस्थापक	आचार्य
श्री रामनाथ सहगल	श्री चन्द्रभूषण आर्य	श्री संजय सिक्का	श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री	श्री श्रीकान्त वर्मा
महाप्रबन्धक	अधिष्ठाता	ट्रस्टी	ट्रस्टी	भूमिदाता

समस्त न्यासीगण तथा देहरादून जिले की समस्त आर्यसमाज

www.pranwanand.org | arsh.jyoti@yahoo.in | gurukulpoundha | 09411106104, 08810005096, 09411310530

'सच्चे देश भक्तों के आदर्श जीवित शहीद वीर विनायक दामोदर सावरकर'

28 मई 2017 134वीं जयंती पर विशेष

—मनमोहन कुमार आर्य

भारत की गुलामी का कारण देश व मनुष्य समाज का वेदपथ से पददलित होना और अज्ञानता व अन्धविश्वासों के कूप में गिरना था। महाभारत के युद्ध के अनेक भयकर परिणामों में से एक दुष्परिणाम यह था कि देश वेद पथ व वैदिक धर्म से दूर हो गया जिसका परिणाम धार्मिक व सामाजिक अज्ञानता, अन्धविश्वास, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं के रूप में हुआ। लगभग 5 हजार वर्षों तक यह स्थिति बनी रही और दिन प्रति यह वृद्धि को भी प्राप्त हाती रही। सन् 12 फरवरी, सन् 1825 को महर्षि दयानन्द जी का जन्म गुजरात प्रदेश की मौरवी रियासत के टंकारा नाम ग्राम में होता है। सच्चे ईश्वर की खोज व मृत्यु पर विजय पाने के लिए वह घर से निकल पड़ते हैं। लगभग 14 देश भर में घूमकर वह योग विद्या सीखते हैं व उसमें पारंगत हो जाते हैं। विद्या प्राप्ति की उनकी अभिलाषा सन् 1860 में मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती जी के अन्तेवासी शिष्य बनकर उनसे संस्कृत की आर्ष व्याकरण का अध्ययन कर व गुरु से मिली अनेक प्रकार की जानकारियों से पूर्ण होती है। गुरु की प्रेरणा व स्वविवेक से उन्होंने अपने भावी जीवन का उद्देश्य देश की गुलामी एवं सभी समस्याओं के मूल कारण अविद्या पर प्रहार करने व सत्य वेद मत के प्रचार व प्रसार को बनाया। सभी उन्नतियों की उन्नति का आधार विद्या होती है जिसके लिए अविद्या का नाश ही एक मात्र उपाय है। संसार में विद्या का स्रोत एकमात्र वेदों का सत्य ज्ञान है। इस मूल मंत्र को पकड़कर स्वामी जी आगे बढ़ते हैं और वेद प्रचार के साथ साथ अज्ञान, सभी अन्धविश्वास, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं व अविद्या पर प्रबल प्रहार करते हैं। उसी का सुपरिणाम आज हम देश की सर्वांगीण उन्नति के रूप में पाते हैं। महाभारत काल तक तो भारत विश्व गुरु था ही, ऋषि दयानन्द जी की कृपा से आज भी भारत अध्यात्म विद्या, जो समस्त विद्याओं का केन्द्र है, के कारण विश्वगुरु है और हमेशा रहेगा। भगवान मनु का श्लोक भी याद आता है जिसमें वह कहते है **'एतद्देश प्रसूतस्य साकाशादग्रजन्मः। स्वं स्वं चरित्रेन् शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'** अर्थात् हमारा यह आर्यावर्त वा भारत देश सारे संसार में विद्वानों को उत्पन्न करने वाला विद्याओं का केन्द्र है। संसार के सभी लोग भारत आकर अपने योग्य सभी प्रकार की विद्या व चरित्र की शिक्षा लेते थे। महर्षि दयानन्द ने भारत को पुनः उसी प्राचीन स्थिति में ला दिया है। देश की आजादी भी उनके विचारों को केन्द्र में रखकर आन्दोलन करने से प्राप्त हुई है। सन् 1857 की प्रथम स्वातन्त्र्य क्रान्ति के समय में उनका अज्ञात जीवन बिताना, भूमिगत होना वा बाद में भी उसका विवरण प्रकट न करना उनके प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका होने की ओर संकेत करता है। उनके साक्षात् शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रान्तिकारियों के प्रथम गुरु रहे और उन्हीं के शिष्य विनायक दामोदर सावरकर थे। 28 मई, 2017 को उनकी 134 वीं जयन्ती है। इस अवसर पर उनका स्मरण व स्वयं को देश की रक्षा के लिए समर्पित करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य व धर्म है। जो देशवासी ऐसा करता है वह प्रशंसनीय है। संसार में उपासनीय तो केवल ईश्वर है परन्तु पृथिवी, वेदमाता व गोमाता के हमारे उपर इतने उपकार हैं कि यह माताएँ उपासनीय न होकर भी हमारी श्रद्धा एवं प्रेम की अधिकारिणी हैं। हम इस अवसर पर हम वेदमाता, भारतमाता व गोमाता का वन्दन भी करते हैं।

वीर विनायक दामोदर सावरकर जी का बचपन का नाम तात्या था। आपका जन्म **28 मई, सन, 1883** को ग्राम भागूर जिला नासिक में हुआ था। घर में आपके माता–पिता और तीन भाई थे। घर में प्रतिदिन भगवती दुर्गा की पूजा होने के साथ रामायण व महाभारत की कहानियां भी बच्चों को सुनने को मिलती थी। महाराणा प्रताप व वीर शिवाज़ी के वीरतापूर्ण प्रसंग भी आपको माता–पिता से सुनने को मिलते थे। 10 वर्ष की आयु में आपकी माता राधा बाई जी का देहान्त हो गया। आप गांव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। बचपन में शस्त्र चलाने का अभ्यास भी करते थे। कुश्ती का शौक भी आपको हो गया था। इन्हीं दिनों आपके इलाके में प्लेग फैला। एक एक करके बिना इलाज लोग मरने लगे। अंग्रेजों ने इस बीमारी की रोकथाम के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया जिससे सावरकर जी और क्षेत्र के लोगों में सरकार के प्रति रोष उत्पन्न हुआ। **इसी कारण चाफेकर बन्धुओं ने वहां के अंग्रेज कमिश्नर की हत्या कर दी। अंग्रेजों द्वारा मुकदमें का नाटक किया गया और इन वीर चाफेकर पुत्रों को फांसी दे दी गई। इससे व्यथित वीर सावरकर जी ने निर्णय किया कि इस अन्याय का बदला अवश्य लेंगे।** बड़े होकर आप नासिक जिले के फर्ग्युसन कालेज में पढ़ने के लिए गये। यहां आपने **'मित्र–मेला'** नाम की देशभक्त युवकों की एक संस्था बनाई। इसका सदस्य बनने के लिए युवकों को यह घोषणा करनी पड़ती थी कि आवश्यकता पड़ने पर वह देश पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे। सभी सदस्य लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित देशभक्ति से पूर्ण पत्र **'केसरी'** व अन्य पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ते थे। महाराणा प्रताप व वीर शिवाजी की जयन्तियां भी आपके द्वारा मनाई जाती थी। 22 मार्च सन् 1901 को इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया का देहावसान हुआ। अंग्रेजों द्वारा देश भर में शोक मनाये जाने की घोषणा की गई। तात्या ने 'मित्र–मेला' संगठन की बैठक बुलाई और उसमें भाषण दिया। **आपने भाषण में कहा कि महारानी विक्टोरिया हमारे देशवासियों की शत्रु थी, उन्होंने हमें गुलाम बनाया हुआ है। हम उनके लिए शोक क्यों मनायें?** समाचार पत्रों में इससे सम्बन्धित समाचार प्रकाशित होने से अंग्रेजों को इस घटना का पता चला और सावरकर जी को फर्ग्युसन कालेज से निकाल दिया गया। लोकमान्य तिलक को इस घटना का पता चलने पर उनके मुंह से निकला कि **'लगता है कि महाराष्ट्र में शिवाजी ने जन्म ले लिया है।'** इसके बाद तिलक जी ने सावरकर जी को बुलाकर उनके शौर्य की प्रशंसा की और उन्हें आशीर्वाद सहित सहयोग का आश्वासन दिया।

देश के लोगों में देशभक्ति की भावना भरने के लिए तिलक जी के आशीर्वाद से आपने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का आन्दोलन चलाया जो अपेक्षा के अनुरूप सफल रहा। देश भर में स्थान स्थान पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई जिससे देशवासी अंग्रेजों की गुलामी से घृणा करने लगे। इस पर लोकमान्य तिलक जी ने कहा कि **"यह आग विदेशी साम्राज्य को भस्म करके ही दम लेगी।"** बी.ए. पास करने के बाद आपने लन्दन जाकर वहां से वकालत करने का निर्णय लिया। 9 जून सन् 1906 को आप लन्दन के लिए रवाना हुए और वहां पहुंच कर महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य व क्रान्तिकारियों के आद्यगुरू श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के इण्डिया हाउस में निवास किया जहां पहले से अनेक क्रान्तिकारी युवक रहा करते थे। यहां आकर आपने पहला काम अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत के इतिहास को पढ़ा। आप ने अपनी अन्तर्दृष्टि से जान लिया कि यह इतिहास पक्षपातपूर्ण है जिसमें भारतीयों से न्याय नहीं किया गया है। आपने भारतीयों का सच्चा इतिहास देशवासियों के सामने लाने का निर्णय किया। आपने कुछ ही काल में कई पुस्तकों की रचना कर डाली। आपकी एक प्रमुख कृति **'सन् 1857 का भारत का प्रथम स्वातन्त्र्य समर'** है जिस पर प्रकाशन से पूर्व ही अंग्रेजी सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया गया जो विश्व इतिहास की प्रथम घटना थी। **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह जी ने इस पुस्तक को पढ़ा और इसे भारी संख्या में छपवाकर युवकों में निःशुल्क वितरण कराया।** यह पुस्तक लन्दन में लिखी गई और वहां से प्रतिबन्ध लगने पर भी भारत कैसे पहुंच गई, यह एक रहस्य है?हमने यह पुस्तक पढ़ी है और हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक भारतीय को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। विदेशी जुल्मी सरकार के होते हुए इतिहास के इतने अधिक तथ्यों को इकट्ठा करना और अल्प समय में उसे रोचक रूप में प्रस्तुत करना एक आश्चर्यजनक घटना है जिसका अनुमान पुस्तक को पढ़कर ही लगाया जा सकता है।

आप इटली के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मैजिनी से इतने अधिक प्रभावित थे कि आपने इन पर एक पुस्तक की ही रचना कर डाली। विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को देश भक्ति की शिक्षा देने के लिए आपने सन् 1857 की क्रान्ति के स्मृति दिवस के अवसर पर इसके प्रमुख तीन अमर हुतात्माओं वीर कुवंर सिंह, मंगल पाण्डे तथा रानी लक्ष्मी बाई को स्मरण करने का निर्णय किया और विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सुझाव दिया कि वह इस दिन अपने कोट पर एक बिल्ला लगायें जिस पर लिखा हो कि **"सन् 1857 की क्रान्ति के शहीदों की जय"**। इस घटना से इंग्लैण्ड की सरकार चौंक गई और वीर सावरकर के विरूद्ध खुफिया निगरानी और बढ़ा दी गई। भारतीय युवक मदनलाल ढ़ीगरा जी ने लन्दन में वीर सावरकर जी से कर्जन वायली की हत्या के विषय में विस्तृत बातचीत की तथा दोनों में योजना पर सहमति हुई। 11 जुलाई सन् 1909 को लन्दन के जहांगीर हाल में एक बैठक में भारतीयों पर अत्याचारों के दोषी कर्जन वायली उपस्थित थे। पूर्व जानकारी प्राप्त करके मदनलाल ढ़ीगरा और वीर सावरकार आदि क्रान्तिकारी वहां पहुंच गये। बैठक के दौरान **प्राणवीर मदन लाल ढ़ीगरा की पिस्तौल से गोली चली और कर्जन वायली वहीं ढेर हो गये। एक अंग्रेज ने ढीगरा जी को पकड़ने की कोशिश की और वह भी उनकी पिस्तौल की गोली से अपने प्राण गंवा बैठा।** इस घटना के परिणाम स्वरूप श्री ढ़ीगरा को 16 अगस्त सन् 1909 को लन्दन में फांसी दे दी गई। कर्जन वायली की हत्या के विरोध में एक निन्दा प्रस्ताव पारित करने के लिए सर आगा खां ने लन्दन में एक बैठक का आयोजन किया। शोक प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ जिसमें कहा गया कि हम सब सर्वसम्मति से कर्जन वायली की हत्या की निन्दा करते हैं। इसके विरोध में वहां बैठे **वीर सावरकर खड़े हुए और दृढता से बोले कि सर्वसम्मति से नहीं, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।** इससे अंग्रेजों को कर्जन वायली की हत्या में वीर सावरकर का हाथ होने का शक हुआ। उन पर निगरानी अब पहले से अधिक कड़ी कर दी गई। मित्रों के परामर्श से वह पेरिस चले गये परन्तु वहां मन न लगने पर परिणाम की चिन्ता किए बिना लन्दन लौट आये।

शेष पृष्ठ 6 पर....

परम्परागत मान्यताओं एवं आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के आधार पर

गाय के दूध की महत्ता एवं विशेषताएं

– गाय का दूध 2 घंटे में हज़म होता है जबकि भैंस के दूध को हज़म होने में 9 घंटे लगते हैं।

– गाय का दूध कुपोषण दूर करता है। क्योंकि गाय का दूध संपूर्ण आहार है।

– गाय का दूध कफ नाशक है भैंस का दूध कफवर्धक है।

– गाय का दूध कोलोस्ट्रोल कम करता है जबकि भैंस का दूध कोलोस्ट्रोल बढ़ाता है।

– देसी गाय के कुभ में सूर्य केतू नाड़ी होती है। जो सौर ऊर्जा को आकृष्ट करती है। जिसके कारण केरेटीन तत्व का निर्माण होता है। इसी कारण गाय का दूध पीला होता है। इसे स्वर्ण तत्व कहते हैं। यह बुद्धि एवं स्मरण शक्ति वर्धक तत्व है।

– नागपुर की प्रसिद्ध देवलापुर गौशाला ने गोमूत्र के कैंसर विरोधी तत्व का यू एस पेटेन्ट करवा लिया है।

–गाय के गले के झालर (गलकम्बल) पर हाथ फेरने से रक्त चाप (बी.पी.) सामान्य होता है।

–टी बी का रोगी गौशाला में रह कर गो सेवा करे तो उस की टी.बी. दूर हो सकती है।

– विश्व स्वास्थ संगठन (W.H.O) की रिर्पोट के अनुसार मांसाहार से 160 रोग उत्पन्न होते हैं।

– गाय के पहले छह दिन का दूध जिसे देसी भाषा में कीड़ कहा जाता है। सामान्य दूध से 100 गुना ज्यादा शक्तिदायक होता है। इसे विदेशों में आज खिलाड़ी (एथलीट) अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उपयोग में ला रहे हैं। इस का नाम Covin Colostrem कहा जा रहा है और आज इसका करोड़ों का व्यापार हो रहा है।

– अमेरिकी वैज्ञानिकों के अनुसार देसी गाय के दूध में ए–2 तत्व होता है जो कैंसर विरोधी है और मस्तिष्क के रोगों को दूर करता है तथा जरसी गाय के दूध में ए–1 तत्व होता है जो मस्तिष्क के रोगों को बढ़ाते हैं तथा कैंसर को बढ़ाते हैं।

– पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र) से अनेक रोग दूर होते हैं ऐसा दूध, गोबर गोमूत्र आदि के रसायनिक विश्लेषण से भी सिद्ध होता है।

गाय के दूध का रसायनिक विश्लेषण

– गाय के दूध में 6 प्रकार के विटामिन, 25 प्रकार के खनिज तत्व, 21 प्रकार के एमीनो एसिड, 19 प्रकार के नाइट्रोजन, 8 प्रकार के किण्वनण, 4 प्रकार के फास्फोरिस योगिक, 2 प्रकार की शर्करा होती है। स्वर्ण तत्व जिसे विज्ञान की भाषा में कैरोटिन कहते हैं पाया जाता है। कैंसर विरोधी तत्व जिसे विज्ञान की भाषा में एम.डी. जी. आई कहते हैं, पाया जाता है। बुद्धि तथा स्मृति वर्धक तत्व जिसे विज्ञान की भाषा में सेरीब्रोसाडक कहते हैं पाया जाता है इसके अतिरिक्त रेडियो धर्मिता नाशक तत्व जिसे विज्ञान की भाषा में स्टोनटाइन कहते हैं, पाया जाता है।

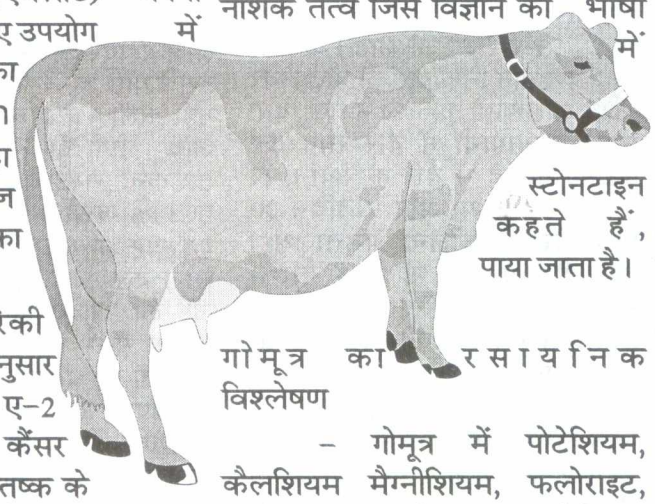

गोमूत्र का रसायनिक विश्लेषण

– गोमूत्र में पोटेशियम, कैलशियम मैग्नीशियम, फलोराइट, यूरिया, फास्फोरस, अमोनिया, स्वर्णक्षार, लेन्पोज तथा जलतत्व पाए जाते हैं इन के कारण ही गोमूत्र से रोग दूर होते हैं। ये शरीर में स्थित मित्र कीटाणुओं का वर्धन करते हैं तथा शत्रु कीटाणुओं का नाश करते हैं।

गाय के गोबर का रसायनिक विश्लेषण

– गाय के गोबर में नाइट्रोजन, फास्फोरस पोटाशियम, जस्ता (मैंगनीज), ताम्रतत्व (बारोन) मोलिनडम्म, कोबाल्ट, कोबाल्ट सल्फर, चूना, सोडियम, गन्धक पाए जाते हैं।

इन विशेषताओं के कारण ही पंचगव्य दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, से अनेक रोगों को दूर किया जा सकता है।

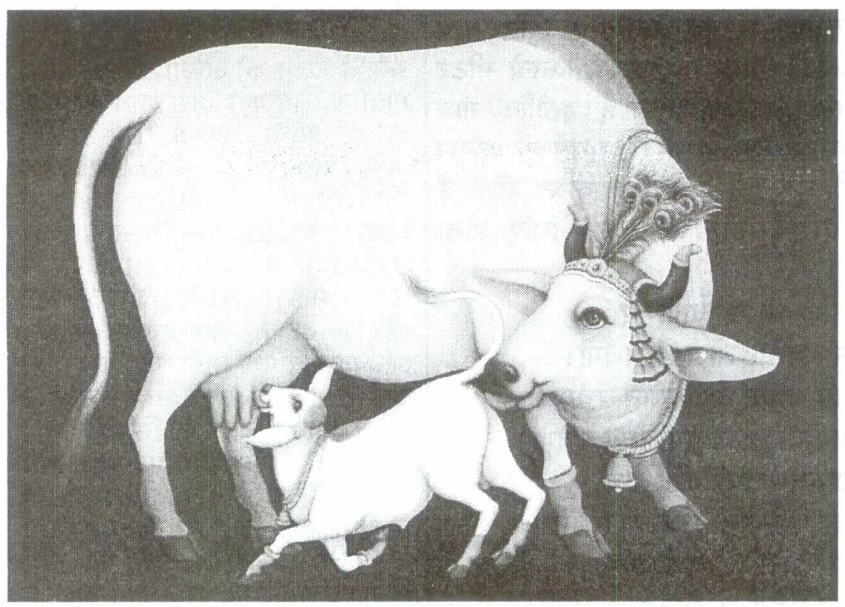

गाय में प्रकृति प्रदत्त सत्व गुण है

–गाय का बच्चा (बछड़ा) जन्म के समय ही खड़ा हो जाता है जबकि भैंस का बच्चा (पड़वा) तीन दिन बाद खड़ा होता है। इसीलिए गाय का बछड़ा फुर्तीला होता है जबकि भैंस का बच्चा सुस्त होता है।

– गाय का बछड़ा हजार गायों में भी अपनी मां को पहचान लेगा और उसी के थन में मुंह लगाएगा लेकिन भैंस का बच्चा इतना मंदबुद्धि होता है कि किसी भी भैंस के नीचे खड़ा कर दो, थन से दूध पीने लगेगा।

वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार दूध, गोमूत्र, गोबर के अतिरिक्त गोमाता के शरीर के अन्य भाग भी रोगों को दूर करते हैं।

– गाय के सींगों से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा संचित होती है अन्य किसी पशु के सीगों में ऐसी ऊर्जा का निर्माण नहीं होता।

– गोवंश के खुरों में ऐसे जीवाणु होते हैं जो चलने से भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। इसलिए गोवंश समूह जब चरने के बाद वापस अपने गांव में आते हैं तो उस गोधूलि का स्नान भी स्वास्थ्य वर्धक होता है।

गाय पर्यावरण को शुद्ध करती है

– गाय के शरीर के रोम–रोम से ओजोन निकलता है और इस कारण इसकी त्वचा विषाणु रहित होती है। जिससे शरीर में पिस्सू और जुएं नहीं पड़ती।

– प्राणियों में गाय ही ऐसा प्राणी है जो 24 घंटे अपने उच्छवास में आक्सीजन छोड़ता है।

–गाय के करोड़ों रोमों में गूगल की गन्ध प्रवाहित होती है जो पर्यावरण को शुद्ध करती है।

– एक तोला गाय का घी हवन में डालने से वायुमण्डल में 1 टन आक्सीजन तैयार होती है।

प्राचीन परम्पराएं एवं मान्यताएं

–ऐसी मान्यता है गर्भवती महिला चांदी की कटोरी में गाय के दूध का दही जमा कर सेवन करें तो बच्चा स्वस्थ फुर्तीला और नीरोग पैदा होता है।

–दानों में गो दान सब से बड़ा दान माना गया है। वेदों में गाय और बछड़े को दिव्य प्राणी कहा गया है। और वह अघन्य हैं।

– हमारे शास्त्रों में इन्हीं गुणों के कारण गाय को अघन्या (न मारने योग्य) प्राणी कहा गया है। इसलिए विवाह जैसे मांगलिक आयोजन में गो दान एक महत्वपूर्ण भाग है।

–कुरान के अनुसार भी गाय का दूध अमृत है। और गाय का गोश्त बीमारी है।

– हमारी परंपरा में प्रत्येक परिवार में गो ग्रास निकालने की परंपरा रही है अर्थात् पहली रोटी गाय के लिए ग्रो ग्रास के रूप में निकाली जाती है।

शास्त्रों में तथा साहित्य में गाय का महिमागान किया गया है

– कालिदास जी ने रघुवंश में लिखा है कि राजा दिलीप ने पुत्र प्राप्ति के लिए गो सेवा का अनुष्ठान किया था। वह स्वयं नन्दिनी के पीछे पीछे जा कर उसे जंगल में चराते थे। नन्दिनी ने परीक्षा ली। शेर गाय को खाने के लिए आ गया तो राजा दिलीप ने गाय को न मार कर अपना शरीर उसे मांस के लिए ले लेने का आग्रह किया। परीक्षा पूर्ण हुई। राजा दिलीप को रघु के रूप में पुत्र प्राप्ति हुई उससे ही रघुवंश चला जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जन्म हुआ।

– गोकरूणानिधि में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि गाय के मांस से एक समय 80 लोग अपना पेट भर सकते हैं। जबकि गाय के जीवन भर दूध से 4 लाख 10 हजार 640 समय व्यक्ति को आहार मिलता है।

– महाभारत में यक्ष युद्धिष्टिर संवाद में यक्ष ने पूछा, 'पवित्रं किम्' अर्थात पवित्र क्या है। तो युधिष्ठिर का उत्तर था, 'गावः पवित्रम्' अर्थात गाय पवित्र है।

– भगवान कृष्ण गो पालक थे इसीलिए उन्हें गोपाल कहा गया है।

– श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं कहा है कि पेड़ों में मैं पीपल हूं पशुओं में मैं कामधेनू हूं।

– गाय को विश्वस्य मातरः कहा गया है क्योंकि मां तो केवल जन्म के समय दूध पिलाती है जबकि गाय जीवन भर दूध पिलाती है।

– दीवाली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा में गाय की पूजा का विधान हमारी संस्कृति में किया गया है।

– राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ के पश्चात दस लाख गाय दान में दी थीं।

भारत की आत्मा गाय में बसती है परन्तु सरकार की नीति क्या है

1947 में भारत में गाय की 100 से ऊपर नस्लें थीं आज मात्र 32 नस्लें शेष बची हैं।

– 1947 में भारत में गाय 60–70 करोड़ थीं। अब केवल 16 करोड़ रह गई हैं।

– भारत सरकार की मांस निर्यात की पालिसी 1976 की रिर्पोट में 70,000 टन मांस निर्यात होता था 1997 में 13 लाख 80 हजार टन मांस का निर्यात होता था।

– सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1991 में 1000 जनसंख्या पर 403 पशुधन था। अब यह पशुधन 1000 की जनसंख्या पर मात्र 50 रह गया है।

जरसी गाय और देसी गाय की पहचान

– देसी गाय की पीठ पर कुभ होता है जबकि जरसी गाय की पीठ पर कोई उभार नहीं होता। वह सीधी सपाट होती है। देसी गाय के गले में झालर होती है जिसे गल कम्बल भी कहते हैं तथा जरसी गाय के गले में ऐसी कोई झालर नहीं होती ।

– भैंस व जरसी गाय खूंटे से बंध कर दूध देती हैं। लेकिन देसी गाय चरागाह में घूम कर 5–6 लीटर दूध देती है। गाय के लिए 6 किलो मीटर चलना अनिवार्य होता है। इसीलिए गाय घूमती नजर आती हैं। घूमने के कारण ही सूर्य की किरणें आकृष्ट होती हैं और कैराटीन तत्व का निर्माण होता है।

अतः यह जान लीजिए

गाय बचेगी तो कृषि बचेगी।
गाय बचेगी तो किसान बचेगा।
गाय बचेगी तो पर्यावरण बचेगा।
गाय बचेगी तो गांव बचेंगे।
गाय बचेगी तो स्वास्थ्य बचेगा।
गाय बचेगी तो देश बचेगा।
गाय बचेगी तो मानवता बचेगी।

नगर के निवासी गाय की सेवा के लिए क्या कर सकते हैं। वह गो प्रेमी बने, गोव्रती बनें।

दिल्ली में अनेक स्थानों पर इस प्रकार के प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। जिनमें जनसाधारण का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। यह आन्दोलन बढ़ेगा देश भर की गोशालाएं गोबर और गोमूत्र के उपयोग में आने के कारण अब स्वावलम्बी होती जा रही हैं।

रसायन रहित गो दूध को भी पैकेट में उपलब्ध करवाया जा रहा है।

– स्वदेश पाल

यज्ञ की सुगन्ध से शोभायमान हुआ आशियाना उत्सव सत्संग स्वर्ग की सीढ़ी है

भिवाड़ी स्थित आशियाना उत्सव के पार्क में विगत मास विश्व शान्ति एवं सद्भावना की वृद्धि के लिए वहाँ के निवासियों द्वारा 7 कुण्डीय विराट यज्ञ का आयोजन किया गया। वेद मन्त्रों की पावन ध्वनि और स्वाहाकार से समस्त वातावरण गुंजायमान हो उठा। स्थानीय निवासियों तथा बाहर से आये श्रद्धालु जनों द्वारा मन्त्र मुग्ध भाव से आशियाना उत्सव की शान्ति के निमित्त आहुतियाँ अर्पित की गई। इस अवसर पर समारोह के संयोजक आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के उपप्रधान श्री सुरेश चुघ ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी आर्य बन्धुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने आये हुए समस्त प्रबुद्धजनों का आह्वान करते हुए उन्हे आर्य समाज तथा वैदिक विचार धारा से जुड़ने की प्रेरणा दी।

शेष पृष्ठ 4 का....

वीर सावरकर जी के पेरिस से लन्दन वापिस आते ही उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 15 सितम्बर, 1910 को उन पर मुकदमा चला और 23 जनवरी 1911 को उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया गया। इसके बाद 'मेरिया' नामक जहाज में बैठा कर उन्हें भारत भेजने का प्रबन्ध किया गया। जहाज के चलने पर वह चिन्तन मनन में खो गए। उन्हें जहाज में एक अंग्रेज पत्रकार से पता चला कि देश की आजादी के लिए आन्दोलन करने के कारण उनके दो भाई भी भारत की जेलों में हैं। इस पर उनकी प्रतिक्रिया थी कि मुझे गर्व है कि मेरा पूरा परिवार ही भारत माता को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के कार्य में संलग्न है। जेलों में पड़कर जीवन समाप्त करने की अपेक्षा उन्होंने भारत माता के लिए कुछ ठोस कार्य करने के बारे में सोचा। इसके लिए उन्होंने जहाज से भागने का विचार किया। वह शौचालय में गये और उसकी एक खिड़की या रोशनदान को उखाड़कर उससे समुद्र में कूद पड़े। अंग्रेज पुलिस उन पर गोलियों की बौछार करने लगी और वह तैर कर आगे बढ़ रहे थे और अधिकांश समय पानी के अन्दर ही रहते थे। इस स्थिति में उन्होंने पास के किसी द्वीप में पहुंचने का निर्णय किया। वह फ्रांस के एक द्वीप पर पहुंच गये जहां के सिपाही ने सावरकर जी के गिरफ्तार करने के निवेदन को अनसुना कर उन्हें ब्रिटिश सैनिको को सौंप दिया। उनके शरीर पर बेड़िया डाल दी गई जिससे वह हिल–डुल न सकें। इस प्रकार उन्हें एक नाव से उसी जहाज पर लाकर, जिससे वह कूदे थे, भारत पहुंचाया गया जहां उन पर फिर मुकदमा चला और उन्हें कालापानी की सजा दी गई। उनकी सजा दो जन्मों के कारावास की थी जिसके अन्तर्गत उन्हें 50 वर्षों तक कालापानी में बिताने थे। दो जन्मों की सजा सुनाये जाने पर भी सावरकर जी मुस्कराये थे और जज को कहा कि आप ईसाई लोग तो बाइबिल के अनुसार दो जन्म मानते ही नहीं हैं फिर आपका मुझे दो जन्मों का कारावास देना हास्यपद ही है।

इस सजा को काटने के लिए उन्हें अण्डमान निकोबार की पोर्टब्लेयर स्थित कालापानी की जेल में भेज दिया गया। **कालापानी में वीर सावरकर जी को कोल्हू में बैल के स्थान पर जुतना पड़ता था और प्रतिदिन 30 पौंड तेल निकालना पड़ता था। बीच बीच में गर्मी से लोग मूर्छित भी हो जाते थे। ऐसा होने पर कोड़ो से कैदियों की पिटाई होती थी।** खाने की स्थिति ऐसी थी कि बाजरे की रोटी व स्वादरहित सब्जी जिसे निगलना मुश्किल होता था। पीने के लिए पर्याप्त पानी भी नहीं मिलता था। दिन में भी शौच आने पर अनुमति नहीं मिलती थी और बात बात पर गालिया दी जाती थी। ऐसे यातना ग्रह में रहकर इस महान चिन्तक और देशभक्त ने 10 वर्षों तक जीवन व्यतीत किया। कालापानी में वीर सावरकर जी ने जो यातनायें सहन की उसे हमारे सत्ता का सुख भोग चुके वा भोगने वाले सोच भी नहीं सकते। यह उनकी कृतघ्नता कही जा सकती है। यही कारण है कि सरकारों ने उनके देशभक्ति के विचारों व देश के लिए सहन की गई कालापानी की अमानवीय सजाओं की उपेक्षा की और उन्हें वह सर्वोच्च मान–सम्मान नहीं दिया जिसके वह अधिकारी थे व हैं। वीर सावरकर जी का बलिदान किसी भी बड़े से बड़े सत्याग्रही से कहीं अधिक बड़ा बलिदान था, ऐसा हम अनुभव करते हैं। हमने पोर्ट ब्लेयर जाकर कालापानी की उस जेल को देखा है जिसमें सावरकर जी रहे और उन यातनाओं को भी अनुभव किया है जो उनको दी गईं थी। आज भी वह कोल्हू, वहां का फांसी घर जो सावरकर जी के कमरे के सम्मुख था तथा वहां के सभी स्थानों को देखा है। हम चाहेंगे कि सभी देशभक्तों को कालापानी की जेल को देश का प्रमुखतम तीर्थ स्थान मानकर वहां जाना चाहिये और भारतमाता के उन वीर सपूतों को अपनी श्रद्धांजलि देनी चाहिये जहां सावरकरजी सहित अनेक देशभक्तों ने घोर यातनायें सहन की थी। इतना और बता दें कि वहां सायं के समय एक लाइट एण्ड साउण्ड शो होता है जिसमें वर्णित उस काल की स्थितियों के अनुभव व उन्हें देखकर रोंगटे खड़ें हो जाते हैं। प्रत्येक देशभक्त के लिए यह दर्शनीय है। इस लाइट एण्ड साउंड शो को यूट्यूब से भी डाउनलोड कर देखा जा सकता है।

देश की आजादी के बाद स्थापित केन्द्रीय सरकार की अदूरदर्शिता पूर्ण नीतियों का परिणाम सन् 1948 में पाकिस्तान पर कश्मीर पर आक्रमण के बाद सन् 1962 में चीन के आक्रमण के रूप में सामने आया। चीन ने हमारी 400 वर्ग मील भूमि पर कब्जा कर लिया। सावरकर जी को इससे गहरा धक्का लगा और उन्होंने खून के आंसू पीये। सन् 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया परन्तु अब लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे और हमारी सेनायें भी पूरी तरह से तैयार थी। पंजाब में हमारी सेनायें लाहौर तक और कश्मीर में हाजीपीर दर्रे तक आगे बढ़ गई। सावरकर जी ने लालबहादुर शास्त्री जी को विजय की बधाई दी। परन्तु तभी ताशकन्द समझौता हुआ जिसमें वीर भारतीय सैनिकों का खून बहाकर प्राप्त किया गया समस्त भूभाग पाकिस्तान को लौटाना पड़ गया और लाल बहादुर शास्त्री भी हमसे बिछड़ गये। इसके पीछे हुए षड़यन्त्र का आज तक पता नहीं चला। क्या कभी इस षड़यन्त्र की जांच होगी?वीर सावरकर जी इस ताशकन्द समझौते से अत्यधिक व्यथित हुए। **26 फरवरी 1966 को भारत माता का यह अन्यतम पुत्र अपने देह को छोड़ कर स्वर्ग सिधार गया।** सावरकर जी का जीवन भारतवासियों के लिए प्रकाश स्तम्भ है। यदि देश उनके बताये हुए मार्ग पर चलेगा तो इससे देश बलवान व अपमानित होने से बचा रहेगा। सावरकर जी पर हिन्दी में पूरी अवधि का चलचित्र भी बना है जिसे प्रत्येक देशभक्त देशवासी को देखना चाहिये। यह पहला चलचित्र है जिसे सावरकर जी के भक्तों से चन्दा एकत्र करके बनाया गया है। वीर सावरकर जी के 132 वें जन्म दिवस पर उन्हें हमारी कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धांजलि।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

परोपकार है धर्म हमारा, हर कर्म प्रभु की सेवा

– अशोक सहगल (प्रधान)

आर्य संस्कृति का अनुपम केन्द्र आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा संचालित "द्वारका नाथ सहगल वैदिक विकास एवं वेद प्रचार केन्द्र" एक महत्वपूर्ण विभाग है जो 'सेवा अस्माकं परमो धर्मः की उक्ति को क्रियात्मक रुप से प्रस्तुत कर रहा है।

सर्वविदित है कि आज का युग विज्ञान व प्रतिस्पर्धा का है। हर कोई अपना लक्ष्य प्राप्ति हेतु चेष्टारत है। आज का युवा बहुत कुछ पाना व करना चाहता है। परन्तु प्रतिभा सम्पन्न एवं परिश्रमी होने के उपरान्त भी अभाव एवं असुविधाओं के कारण वो शत प्रतिशत सफल नहीं हो पाते हैं। अतः असुविधाऐं एवं अभाव उनके उड़ान व सपनों को साकार करने से न रोक पाये इसलिए ऐसा एक पुण्यप्रद प्रयास दानवीर श्री के.एल. गंजू जी के द्वारा किया गया है। इस प्रयास के अन्तर्गत विभिन्न गुरुकुलों से आये हुए छात्रों जो दिल्ली विश्वविद्यालय एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत है उन्हें निःशुल्क आवास व भोजन की व्यवस्था की गई है। नित्यव्यवहार्य वस्तुओं के साथ साथ मासिक छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था है। ध्यातव्य है कि कन्याओं को भी अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति की व्यवस्था है।

इस कार्य में माननीया श्रीमती रीता चौधरी चेयर परर्सन (बी.एल.कपूर हस्पताल, पूसा रोड नई दिल्ली) का भी अनन्य सहयोग है। इस पवित्र कार्य में उनका अनन्य सहयोग व समर्थन के लिए आर्य समाज उनका ऋणि है।

श्रद्धेय डॉ. महेश विद्यालंकार एवं डॉ. कैलाश चन्द्र जी ने समसामयिक स्थिति में छात्रों को मिलनेवाली चुनौतियों को बारीकी से अध्ययन किया एवं इस कार्य हेतु सभी को प्रेरित किया। सौभाग्य से ही ऐसे विचारक एवं चिन्तनशील मिलते है। कहा भी गया है – **सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति।**

सूचित किया जाता है कि जो भी ब्रह्मचारी अध्ययन हेतु असमर्थ है व सहायता चाहते हैं तथा आर्य समाज के नियमों को पालने में समर्थ हैं उनसे निवेदन है कि वे आचार्य गवेन्द्र शास्त्री से संपर्क करें।

विशेष आभार

श्रद्धेय श्री वेद प्रकाश मुनि जी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार) ने अपनी पवित्र आय से भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को एक सहायतार्थ राशि प्रदान की है। यह राशि उन्होंने नये–नये क्षेत्रों में नये प्रचारकों को रखने के लिए बनायी गयी स्थिर निधिकोष के लिए प्रदान की है। हम इनके भरपूर आर्थिक सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

–नरेन्द्र वलेचा (प्रधान)

महात्मा रामकिशोर वैद्य का निधन

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं पंजाब सभा में अपनी वेद प्रचार की सेवाएं देने वाले, आर्यसमाज सी–13 हरि नगर के धर्माचार्य महात्मा राम किशोर वैद्य जी का 5 अप्रैल 2017 को प्रातः 10 बजे 99 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से तिहाड़ गांव (सुभाष नगर) शमशान घाट में आचार्य कुंवरपाल शास्त्री, आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया ।

शोक समाचार

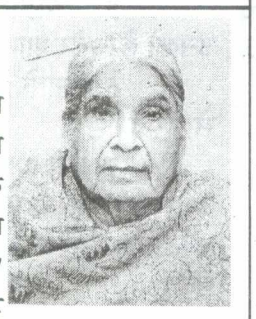

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल की निवर्तमान प्रथम महिला प्रधाना एवं वर्तमान में संरक्षिका हिन्दी–सलाहकार समिति की वरिष्ठ प्रभारी, भारतीय हिन्दू सभा की ज्येष्ठ सदस्या वैदिक विदुषी एवं वीर माता आर्य समाज मस्जिद मोठ की संरक्षक दान दात्री, श्रीमती सुशीला त्यागी जी 99 उदय पार्क दिल्ली–110049 27 मार्च 2017 को इस नश्वर संसार को छोड़कर चली गयी। अंत्येष्टि वैदिक रीति से लोदी रोड़ शमशान पर 28 मार्च को की गयी। स्मृति शेष 7 अप्रैल 2017 को आर्य समाज मस्जिद मोठ में की गयी। परिवार ने विभिन्न संस्थाओं को दान दिया। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा/ट्रस्ट की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

–चतर सिंह नागर (महामंत्री/ट्रस्टी, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा/ट्रस्ट

माह अप्रैल 2017 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली–110001	वार्षिक सहायता	11000/–
दयावती नित्यानन्द वनाती न्यास, शालीमार बाग, दिल्ली		4000/–
श्रीमान अजय अरोड़ा जी ऋतु अरोड़ा जी, अपनी पूज्य माता जी की स्मृति में		1500/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15 ऐ, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रानगर, बंगलौर, कर्नाटक	मासिक	700/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री शिव कुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	200/–
श्रीमती राज सेठी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा दिल्ली	मासिक	100/–

अप्रैल मास का दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	500/–
श्रीमती संतोष बहल जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/–
श्रीमती नीलम खुराना जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/–
श्रीमती कुष्णा दुबे जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/–
आयुष्मती स्वस्ति आर्या, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/–
पं. श्री रुकमपाल शास्त्री जी, गुरुकुल गौतम नगर	100/–

वर्तमान समस्याओं का समाधान गुरुकुल शिक्षण संस्थान

शिक्षा शब्द शिक्ष् धातु से बनता है। जिस का अर्थ है विद्या का ग्रहण और ग्राहण। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सूचना से अधिक संस्कारों का महत्त्व था। जिससे समाज में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का विकास होता था। लोग अपनी सामाजिक जिम्मेदारी व धर्म का परिपालन करते थे। इस लिए सब जगह सुख–शान्ति व समृद्धि का वास था। ज्ञान–विज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर थे और भारतवर्ष विश्व गुरु की पद्वी से सुभूषित था।

हजारों वर्षों की परतन्त्रता के फलस्वरूप भारतीय शिक्षा व्यवस्था विदेशियों के नियन्त्रण में आ गई और उन्होंने मनमाने तरीके से षड्यन्त्र पूर्ण परिवर्तन कर भारतीय मनीषा को पतित कर ज्ञान की पावन पुनीत धारा को धूमिल कर दिया। लोगों में नैतिक–चारित्रक व आध्यात्मिक पतन प्रारम्भ हो गये। शिक्षा केवल रोजगार का साधन बन कर रह गई। ज्ञान का विकास कुण्ठित हो गया। और हम अपनी मेधा शक्ति को खो बैठे। सन् 1875 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पुनः स्थापना कर प्राचीन ज्ञान परम्परा का उद्धार किया।

गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था सूचना के साथ–साथ शील–सदाचार–नैतिकता व संस्कारों का बीजारोपण कर भौतिक उन्नति के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास भी करती है। अध्यात्मिकता के बिना भौतिकता अंधी है तो भौतिकता के बिना आध्यात्मिकता लंगडे के समान है। आध्यात्मिकता व भौतिकता का मेल ही सम्पूर्ण शिक्षा है। शिक्षा का कार्य केवल रोजगार उत्पन्न करना नहीं है। शिक्षा मानव निर्माण की विधा है। जिसे पाकर हम एक पूर्ण मानव बन पाते हैं।

ऋषियों की दूरदर्शिता ने शिक्षा को इहलौकिक और पारलौकिक सुख का साधन बना दिया। ज्ञान न केवल सांसारिक दुःखों को दूर करने वाला है, बल्कि जन्म–मृत्यु के बन्धन को काट कर मुक्ति प्राप्ति का साधन भी है। यह चिन्तन शिक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग बना देता है।

आज विज्ञान के इस युग में मनुष्य का जितना नैतिक व चारित्रिक पतन हुआ है उस का एकमात्र कारण है, शिक्षा में संस्कारों का अभाव। आज कल शिक्षा केवल सूचना संग्रह का साधन बन गई है। अतः संस्कार विहीन शिक्षा विकास की जगह विनाश का कारण बन रही है । डिग्रियों के रूप में हम शिक्षित होते जा रहे हैं। किन्तु चरित्र–शील–सदाचार–नैतिक व मानवीय मूल्यों से शून्य हो गये है। हम मंगल तक पहुँच गये हैं, किन्तु जीवन जीने की कला आज तक नहीं सीख पाये हैं। बल्कि यूं कहें कि मनुष्य का जीवन पशुओं से भी बदतर हो गया है। भोग–विलास व हिंसा भय जीवन पद्धति हमारे जीवन रोगों–संकटों व दुःख का कारण बन गई है। संसार अशान्ति व बिनाश के गर्त में चला जा रहा है। किसी को किसी से प्रेम व सहानुभूति नहीं है। सब परस्पर स्वार्थपूर्ण आचरण से दुःखी हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में एक मात्र आशा की किरण है गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति का प्रचार।

गुरुकुल शिक्षण संस्थानों के माध्यम से मानवीय मूल्यपरक शिक्षा का संदेश देकर भावी पीढ़ी को नैतिक व चारित्रिक रूप से उन्नत किया जा सकता है। भौतिक और अध्यात्म के संगम से शिक्षा को पूर्णता प्रदान की जा सकती है। जिससे समाज में शील–सदाचार व नैतिकता का विकास होगा व अध्यात्मिक रूप से उन्नत समाज स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ का व्यवहार करते हुए समाज में सुख–शान्ति व समृद्धि को स्थापित करेगा। संवेदना विहीन मशीनी जीवनचर्या का विनाश होगा। और प्रेम–स्नेह–संवेदना से युक्त मनुष्य समाज में शान्ति व सुख की धारा को प्रवाहित कर आदर्श मनुष्य की मिशाल कायम करेगा।

–आचार्य विकाश तिवारी

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम, बृज घाट गढ़गंगा (उ.प्र.)

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-05-2017 (pages 8) Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

मई – 2017

किशोरों में हताशा दिखने पर मनोवैज्ञानिक उपचार किया जाना चाहिए

– दीनानाथ बत्रा

किशोर अवस्था में (13 वर्ष से 19 वर्ष की आयु) किशोरों की आत्महत्या की प्रवृति तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। इसके अनेक कारण हैं–

1. अवसाद किशोर अवस्था के सत्व को ही समाप्त कर देता है। इससे बालक का व्यक्तित्व बौना हो जाता है। मुखमण्डल सदा तेजविहीन रहता है। निराशा व्याप्त रहती है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन और क्रोध आ जाता है।

2. निराशा अवसाद रूपी शैतान का प्रबल शस्त्र है जिसके आधार पर वह कितनों का वर्तमान समाप्त कर देता है और सकारात्मक सोच सदा के लिए अदृश्य हो जाती है। मात्र 20 प्रतिशत निराशाग्रस्त छात्रों को उपचार तथा मार्गदर्शन प्राप्त हो पाता है।

हताश ग्रस्त छात्रों के चिह्न तथा संकेत

1. बाल्यकाल से किशोर अवस्था तक पहुंचने पर शारीरिक परिवर्तनों के स्पष्ट संकेत दिखाई देने लगते हैं। किशोर अपने बड़ेपन को समझने लगते हैं और वह भाव जाग्रत होना स्वाभाविक हो जाता है कि 'मैं बड़ा हो गया हूं', मुझे अब किसी की सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थिति में माता–पिता के हस्तक्षेप को वह अपनी स्वतंत्रता पर चोट मानता है।

2. अन्तःसंघर्ष की स्थिति उसे निराश तथा हताश करती है। यह हताशा उसके चेहरे तथा व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देती है। कभी क्रोध भी आ जाता है, होठ फड़फड़ाते हैं और आंखों के कोर लाल हो जाते हैं। इस स्थिति में वह :–

कहता कुछ, कह कुछ जाता
करता कुछ, कर कुछ जाता
लिखता कुछ, लिख कुछ जाता

यह अवस्था बड़ी नाजुक होती है इसके संभालने की आवश्यकता है।

3. हताशा की स्थिति में वह उदास रहने लगता है सदा रोने से अकर्मण्यता का आक्रमण उसे निठल्ला बना देता है। सदा रोने–चीखने तथा चिल्लाने की आदत सी बन जाती है। थकावट रहती है, कार्य करने का मन नहीं करता। एकाग्रचित्तता नहीं बन पाती। खाने–पीने तथा सोने की आदतों में बदलाव होता है मन आंदोलित रहता है। 'मैं एकदम व्यर्थ हूं। मेरे जीवन तथा जीने का कोई लाभ नहीं। ये सब चिह्न तथा संकेत उसे आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करते हैं। बहुत अधिक समय तक निराशा की स्थिति खतरनाक होती है।

4. शारीरिक कष्ट विशेषकर सिर दर्द तथा पेट दर्द रहता है। कब्ज भी तंग करती है। शारीरिक परीक्षण से बीमारी का निदान नहीं होता। वास्तव में यह हताशा के चिह्न हैं।

5. किशोर की कोई भी आलोचना करे वह उसे मान्य नहीं। असफलता, अपेक्षा से कम परिणाम आना, माता–पिता की आंकाक्षा के अनुरूप न होना।

6. पारिवारिक वातावरण में परस्परानुकूलता न होना, छोटी–छोटी बातों पर लड़ाई झगड़ा, बच्चों की पिटाई। इन सब कारणों से शांति भंग होती है और जीवन में उत्साहहीनता आती है।

7. ऐसा किशोर एकान्तिक जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसके साथी थोड़े होते हैं।

8. शारीरिक क्षमता कम रहने के परिणामस्वरूप, विद्यालय में पढ़ाई में मन नहीं लगता। एकाग्रचित्तता न होने के कारण मन जहां कहीं भटकता रहता है। घर में गृह कार्य नहीं करता, विद्यालय में अध्यापक की प्रताड़ना और घर में परिणाम की सूचना मिलने पर माता–पिता की क्रूर दृष्टि विवश करती है। विद्यालय, घर तथा जीवन से भागने के लिए वह निराशा के गीत गाने लगता है –

ले चल मुझे भुलावां देकर
मेरे नाविक धीरे–धीरे
वहां जहां गम के
मारे न हो यातना,
ताड़ना दुःख के मारे न हो।

9. अपने गम को भूलने के लिए नशा, दवाइयां, धूम्रपान शराब पीने से स्थिति संभलने के स्थान पर बिगड़ जाती है। मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों–ज्यों दवा की।

10. निराशा विद्रोह को जन्म देती है। ऐसी स्थिति में वह हिंसक भी हो जाते हैं। बाद में कृत्य करने के पश्चात आत्मघृणा से पीड़ित वह आत्महत्या की ओर प्रवृत हो जाते हैं।

11. इस श्रेणी के विद्यार्थी असमान्य व्यवहार करने लगते हैं। गाड़ी तेज चलाते हैं। कम्प्यूटर देखते रहते हैं ऑनलाईन नग्न चित्र देखते हैं। गन्दे–भद्दे उपन्यासों को पढ़ने में मन लगाते हैं। सिनेमाघरों में समय व्यतीत करते हैं।

12. हंसी मजाक में आत्महत्या की चर्चा करते रहते हैं। कभी–कभी कहते हैं 'इस जीने से मरना ही अच्छा'। यदि मैं इस संसार से चला गया तो मेरे जाने के पश्चात् लोग मेरे से अधिक प्यार करेंगे।

13. आत्महत्या हेतु गोलियां और विषैले पदार्थ की खोज रहती है।

हताश किशोर के लिए उपचार

1. किशोर से संवाद, मार्गदर्शन करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।

2. उनको आदेश तथा उपदेश से ही समझाना उचित है।

3. बच्चों की सुख–सुविधा का ध्यान तो रखें परन्तु अतिरेक से बचें।

4. बच्चों पर किसी भी प्रकार की नकारात्मक टिप्पणी न करें। किसी के सामने तो कभी भी नहीं।

5. थोड़ा अच्छा करने पर उनको ढेर–ढेर शाबाशी दें।

6. उनके अभावों को भावों से भर दें।

7. ऐसे प्रश्न न करें जिन का उत्तर वह नहीं दे सकते। सरलता से कठिनाई, स्थूल से सूक्ष्मता की ओर बढ़े।

8. अपने परिवार के चिकित्सक या मनोचिकित्सक से परामर्श लेते रहें। शारीरिक परीक्षण करायें। यदि कोई न्यूनता है तो उपचार करायें परन्तु यह अनुभव न होने दें कि कोई बहुत बड़ी लाइलाज बीमारी है।

9. यदि कोई कष्ट अधिक है तो विशेषज्ञ को दिखाना, उपचार कराना और बच्चे को यह अनुभव होना चाहिए कि माता–पिता मेरी आत्मीयता से देखभाल कर रहे हैं।

10. किशोरों को माता–पिता तथा आचार्यो के सामूहिक प्रयास, परामर्श तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता। बच्चों को जादुई स्पर्श से, आत्मीय व्यवहार से समस्या का निदान होता है।

11. अमीर राज ने अपने एक लेख में लिखा है कि किशोर अवस्था का मस्तिष्क जब विकास की ओर होता है जो बाह्य वातावरण तथा वस्तुओं का उस पर गहरा प्रभाव होता है और मस्तिष्क स्नायुमण्डल पर गहरा दबाव पड़ता है जब वह निराशा अथवा उद्वेलित स्थिति में होता है।'

12. अधिक नींद नहीं आती, रात को डरकर जाग जाता है। क्रोध करता है, लड़ता है, हिंसा करने लगता है। व्यवहार में असामान्य दिखाई दें, तब डाक्टर को तुरन्त बुलाएं।

13. बच्चे को समझें, जानें, तथा गोद में लें। समस्याओं के निदान में असावधानी न करें। बच्चों के साथ हंसने, खेलने और उन्हें सुविधाएँ देने के लिए समय निकालें।

14. शारीरिक श्रम, व्यायाम, योग आसन, भ्रमण तथा स्वाध्याय, धीरे–धीरे इन सकारात्मक कार्यों की ओर बढ़ने हेतु प्रेरित करें। जीवन का पुनः आरंभ होने लगता है।

15. सामाजिक तथा विधेयक कार्यों में अति ऊर्जा की ओर मोड़ दें।

16. परिवार के लोगों को भोजन तथा भजन एक साथ करना चाहिए।

17. प्रत्येक विद्यालय में सलाह तथा मार्गदर्शन के लिए एक कोना हो, जिसमें इस विषय के पत्रक, पुस्तकें, चित्र पुस्तिकाएं रहनी चाहिए।

एक अध्यापक को इस महत्वपूर्ण कार्य का दायित्व दिया जाना चाहिए। अच्छा हो यदि उसने इस विषय का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य